Vol 6 Issue 2 March 2016

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari
Professor and Researcher ,
Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

Indian Streams Research Journal

International Recognized Multidisciplinary Research Journal

ISSN: 2230-7850 Impact Factor : 4.1625(UIF) Volume - 6 | Issue - 2 | March - 2016

संत साहित्य मे जातिवाद संबंधी लोकचेतना की वर्तमान समाज में प्रासंगिकता

सत्येन्द्र प्रकाश
(विषय हिन्दी)
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा(म प्र)

प्रस्तावना :

वर्णाश्रम भारतीय समाज का मेरुदण्ड रहा है और गार्भस्थ्य सामाजिकता का आधार।वैदिक काल तक आर्य ''गृहस्थ'' हो चुके थे। कृषि और पशुपालन उनके प्रधान पेशे थे। भूमि सम्पति बन चुकी थी। वर्णाश्रम की प्रतिष्ठा कर्मानुसार थी। ''पुरुष सूक्त'' में चातुर्वण्य का स्पष्ट उल्लेख है। फिर भी वर्णों की प्रतिष्ठा में भी अवश्य अन्तर आ गया था।''

ब्रह्मणस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः।
उरु तदस्य–वैश्यस्य यदम्याम् शूद्रों अजायत।''

यद्यपि ऐसा उल्लेख प्राप्त है कि कृत युग में धर्म नहीं था। इसका उद्भव वैदिक युग में हुआ।''प्रारंभ में यह विभाजन आर्य–आर्येत्तर जातियों के रूप में रहा होगा। क्रमशः आर्यों और आर्येत्तर जातियों के रूप में रहा होगा। क्रमशः आर्यों और आर्येत्तर जातियों के सम्बन्ध से उत्पन्न जातियां बनी। अनुलोम–प्रतिलोम विवाह के कारण उत्पन्न सन्तानों ने ''आर्यत्व''प्राप्त किया। आर्यीकरण आर्येत्तर जातियों की केवल स्वीकृति द्वारा नहीं हुआ था। वर्ण व्यवस्था श्रमगत न रह कुल गत होने लगी। वर्ण व्यवस्था जटिल और गहरी इस काल तक नहीं हुई थी। वर्ण–परिवर्तन के प्रमाण वैदिक–पौराणिक साहित्य में उपलब्ध है। सूत्र काल में वर्ण–शुद्धता पर ध्यान दिया जाने लगा था। फलस्वरूप विवाह और भोजन सम्बन्धी संकीर्णतायें सामाजिक जीवन में आने लगी थी। आचार–नियमों में स्थानिक कारणों से अन्तर

आया। धर्मशास्त्रियों में द्वि–जातियों–ब्राह्मणों, क्षत्रियों वैश्यों का वर्णन है और उनके कर्तव्य एवं धर्माचरण भी नियत हैं। इनके सेवक के रूप में शूद्रों का उल्लेख है। अन्तर्वर्ण–विवाह अवैध सम्बन्ध आदि के कारण उत्पन्न संकर वर्णों के साथ निम्न वर्ण अछूत जैसे–चण्डाल, मलेच्छ, श्वपच आदि का उल्लेख प्राप्त है। शूद्रों को अध्ययन का अधिकार नहीं था। वे सम्पत्ति के अधिकारी भी नहीं थे। ऐतरेय ब्राह्मण में इसका उल्लेख इस प्रकार हुआ है – ''शूद्र अन्यों के दास हैं और यथेच्छा में रखे और निकाले जा सकते हैं और इनका वध भी सम्भव है।''शूद्रों की स्थिति सर्वथा दयनीय थी। मनुस्मृति के अनुसार – 'पशु–पालन और द्वि–जातियों की सेवा का अधिकार शूद्रों को है'। पराशर स्मृति के अनुसार – 'सेवा ही शूद्र का परम धर्म है'। युद्ध में पराजित व्यक्ति प्रारम्भ में बन्दी थे और उनसे कार्य लिया जाता था। विशाखदत्त द्वारा वर्णित चाणक्य के त्यागपूर्ण जीवन वाले ब्राह्मणों का यद्यपि अभाव न था।

''उपलकशलमेतद मेदक गोमयानां,बटुभिर पहृतानां वर्हिषां कूटमेतत्।
शरणमपि समिद्भः शुष्यमाणाभिरन्त,विर्नमित पटलात्तं दृश्यते जीर्णमेतत्।''

वर्तमान में समाज के आन्तरिक विघटन, पारस्परिक वैमनस्य एवं सामाजिक अशान्ति के पीछे जातीयता तथा सामाजिक विषमता का बहुत बड़ा हाथ है। संतकालीन समाज में जो जातीय विषमताएँ व्याप्त थी वे कमोवेश वर्तमान समाज में भी अपनी क्रूर छवि दिखा रही है। जिससे सामाजिक संसक्ति ढीली पड़ती जा रही है और राष्ट्रीय एकता को अत्यन्त क्षति पहुंच रही है। सारा राष्ट्र इस जातिवाद के जहरीले घूट निगल रहा है। ब्राह्मण–शूद्र की जो खाई सन्त युगीन समाज में थी, वह आज भी बरकरार है और चौड़ी ही हुई है।

सामाजिक न्याय आज भी काफी दूर है। ब्राह्मण जाति मध्यकालीन समाज में सर्वोच्च थी और आज भी अपनी जातीय सर्वश्रेष्ठता का दम्भ भरती है। ज्ञान–विज्ञान के इस आधुनिक समय में भी छुआ–छूत बनाये हुए हैं और वे तथाकथित निम्न व अछूत जातियों को हेय दृष्टि से देखते हैं। नागर लोगों का यह हाल है, तो गांव की बदसूरती का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है, जहाँ आज भी सर्वाधिक निरक्षरता, भुखमरी और आर्थिक शोषण व्याप्त है। सबसे क्रूर रूप, जातिवाद एवं छुआछूत का गाँवों में देखा जा सकता है। यहाँ खान–पान और आसन में साफ भेद–भाव किया जाता है। कोई हरिजन या दलित ब्राह्मणों के साथ न तो खा सकता है और न चारपाई पर बैठ सकता है। छुआ–छूत का यह आलम है कि ये उच्च जातियों के लोग कुत्ते बिल्लियों द्वारा बर्तन–भाड़े छू जाने पर उन बर्तनों को बेच देते हैं या अग्नि में शुद्ध करते हैं अथवा उस बर्तन को एक स्थान पर शूद्र के पुनर्प्रयोगार्थ रख छोड़ते हैं। बिल्ली का जूठा तो खा पी सकते हैं। किन्तु हरिजन का छुआ तक नहीं स्वीकार, यानी पशु से भी बदतर उसकी स्थिति? ऐसे ढोंगी जातिवादियों की आज मानवतावादी प्रगतिशील लोग निन्दा करें और उन्हें पशु माने तो यह उचित ही है।

सामाजिक दृष्टि से सन्तों की विचारधारा का मूल्यांकन करने पर यह भलीभाँति स्पष्ट होता है कि उन्होंने समाज को एक–नवीन क्रान्तिकारी एवं प्रगतिशील दृष्टिकोण प्रदान किया; वेद–शास्त्र एवं पुराने ग्रन्थ ही सब कुछ नहीं हैं तथा सत्य की कसौटी शास्त्र नहीं अपितु आत्मानुभूति है – इस सत्य की घोषणा करते हुए उन्होंने समाज के सामने एक ऐसा स्वतंत्र दृष्टिकोण प्रस्तुत किया जिससे आज की शब्दावली में 'वैज्ञानिक' एवं 'प्रगतिशील' कहा जा सकता है। यही वह दृष्टिकोण है जिसके बल पर कोई भी समाज परम्परागत रूढ़िवादिता एवं वर्ग–विशेष की मानसिक प्रभुता से मुक्ति पा सकता है। दूसरे, उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति की, चाहे वह शूद्र हो या ब्राह्मण, हिन्दू हो या मुसलमान, गृहस्थ हो या साधक, मोची, धुनिया या जुलाहा हो या लखपति व्यापारी –सभी की, समानता की घोषणा करके भारतीय साम्यवाद की पुनः प्रतिष्ठा की।

इस संदर्भ में संत साहित्य अत्यन्त प्रासंगिक है जिसका उपयोग आज भी जातीय वैमनस्य दूर करने में किया जा सकता है। कबीर पण्डित से पूंछते हैं–''छूत कहाँ से आ गई ? पवन, वीर्य और रज के सम्बन्ध में गर्भाशय में गर्भ रहता है। फिर वह अष्टकमलदल के नीचे से उतरकर पृथ्वी पर आता है, ऐसी हालत में यह छूत कैसे आ गयी। यही वह धरती है जिसमें चौरासी लाख योनि के प्राणियों का शरीर सड़कर मिट्टी हो गया। इस एक ही पाट (पीढ़ा) पर परमपिता ने सबको बिठाया है तो फिर छूत कैसे रही ? अन्न और जल जिसका भोजन और पान किया जाता है, गंदगी से संयुक्त है और सारे संसार के मूल द्रव्य रज–वीर्य, गोबर आदि गंदे हैं। इसी छूत से सभी उत्पन्न हैं। बाजार का पका अन्न साधारणतया इनके लिये त्याज्य था किन्तु दक्षिणा और सुस्वाद भोजन के लोभ में शूद्रों के घर उनकी सामग्रियों द्वारा प्रस्तुत व्यंजन का भोग लगाते थे। ऐसा कार्य किन्तु नीच समझा जाता था और ऐसे ब्राह्मणों को सम्मान नहीं मिलता था। दक्षिणा का लोभ इनमें अवशिष्ट था। साधारण लोगों की धारणा थी कि अधिक पढ़ना अहितकर है। कारण अधिक विद्या ग्रहण करने पर भी ब्राह्मण शिक्षाटन करता था। ब्राह्मण सन्तों को सम्मान की दृष्टि से नहीं देखते थे। जिस प्रकार की जातीय विषमता संत काल में थी, कमोवेश आज भी वह ज्यों की त्यों पूरे राष्ट्र को अपने आगोश में दबोचे हुए है। ब्राह्मण जाति सभी जातियों से सर्वोपरि तब भी थी और आज भी वह अपने को सर्वश्रेष्ठ समझने का मुगालता पाले हुए हैं। ब्राह्मण आज भी निम्न एवं अछूत मानी जाने वाली जाति, शूद्रों का अन्न–जल नहीं ग्रहण करते। गाँवों में इसका पुराना रूप अब भी सुरक्षित है क्योंकि शिक्षा के अभाव में वैज्ञानिकता, आधुनिकता और व्यापक मानवतावादी दृष्टि के तहत दुनियाँ के बदलते हुए चरित्र की गाँव वालों को कोई जानकारी नहीं है। इससे उनकी स्थिति को जड़ता एवं संकीर्णता के नाम पर नजर अंदाज तो किया जा सकता है, किन्तु समाज के विकास की स्वस्थ एवं वैज्ञानिक प्रक्रिया का इससे कितना बड़ा अहित हो रहा है, यह दुखद है। कहना गलत न होगा कि इनकी दृष्टि में मनुष्य का स्थान पशु से भी बदतर है। आधुनिक युग की प्रगतिशील चेतना वाले ऐसे लोगों को पशु से भी बदतर समझें, तो इसे कैसे नकारा जा सकता है ? इस संदर्भ में कबीर की वैज्ञानिक दृष्टि का हवाला गलत न होगा –

'पण्डित देखा मन मों जानी।
कह धौं छूत कहाँ ते उपजी तबहि छूत तुम मानी।।
× × × ×
लख चौरासी बहुत बासना सो सब सरि भो माटी।

एकै पाट सकल बैठारे सींचि लेत धौं काटी।।

वैदिक काल से ब्राह्मणों की यह परम्परा चली आ रही है कि वह जब तक जनेऊ को धारण नहीं करता, उसमें ब्राह्मणत्व नहीं आता। वह अपवित्र माना जाता है। जनेऊ धारण करने के पश्चात ही वह शुद्ध रूप से ब्राह्मण घोषित हो जाता है। जनेऊ ब्राह्मणत्व की अनिवार्य शर्त है। इसे धारण करने में ब्राह्मणों का एकाधिकार सा हो गया है। शूद्रों की बात क्या, ब्राह्मणों से मिलती–जुलती अन्य जातियाँ भी इसे धारण करने का अधिकार नहीं रखतीं। इस दिशा में भी सन्तों की वाणियाँ आज के समाज को इसकी व्यर्थता का बोध कराने में समर्थ हैं। सन्त पलटूदास की यह वाणी वास्तविकता के मर्म को उधेड़कर रख देती है–

'पाड़े जी तीन ताग तुम लाए बभनौ को क्या तुम पहिराये।
तुमरे तन में दूध जो निकरे शूद्र के निकरै लोहू।
इहै परीक्षा दीजै पाड़े तब तुम बाभन होहू।
शुद्रिन मेहर घर के भीतर नित उठि करै रसोई।
तेकरे किहा खाउ तुम पाड़े सकल बभनई खोई।।'

जात–पांत की यह विषमता ब्राह्मण और शूद्रों के बीच तक ही सीमित नहीं है, अपितु निम्न जातियाँ भी इससे ग्रस्त हैं। आपस में वे भी एक नहीं हैं। उनके यहाँ भी कर्म को महत्व न देकर जाति को महत्व दिया जाता है। हालाँकि उनकी इस मानसिकता के पीछे ब्राह्मणवादी मानसिकता का ही हाथ है क्योंकि ब्राह्मणों द्वारा दिखाए गए रास्ते पर चलना इनके लिए भी सुगम एवं अनुकरणीय रहा है।

हिन्दुओं के अलावा भ्रातृत्व एवं बंधुत्व की बुनियाद पर जन्मा इस्लाम भी इससे बरी नहीं है। उनमें शिया और सुन्नी को लेकर आए दिन विवाद चलता–रहता है। शिया अपने को सुन्नियों से श्रेष्ठ समझते हैं। मुसलमानो में यह मान्यता है कि जब तक शेख के द्वारा मुसलमानी नहीं होती, तब तक व्यक्ति में शुद्धता नहीं आती। ब्राह्मणों की ही भाँति मुसलमानों की इस विसंगति को लक्ष्य करते हुए सन्त पलटूदास ने जाति सम्बन्धी उनकी खोखली मान्यता को इस प्रकार उजागर किया है –

'शेख की सुन्नति से मुसलमानी भई,सेखानी को नाहिं तुम कहौ सेखा।
आधी हिन्दुइनि रहै घरै के बीच में,पलटू अब दुहुन के मारू भेखा।।'

जाति सम्बन्धी यह विषमता आज जीवन के हर क्षेत्र में है। इसे खान–पान, रोजी–रोटी, विवाद–संस्कार सभी क्षेत्रों में देखा जा सकता है। आजादी के करीब चालीस वर्षों बाद भी यह देश इसके चंगुल से मुक्त नहीं हो सका है। जातीय विषमता को दूर करने का नारा लगाने वाली प्रायः सभी सरकारें अपने सत्ता–स्वार्थ के लिए प्रकारान्तर से इस विषमता को मजबूत ही कर रही हैं। आज देश की राजनीति जातीयता की संकीर्ण स्वार्थों की भित्ति पर खड़ी है। पता नहीं, देश को जातीय विषमता के इस अभिशाप से कब मुक्ति मिलेगी ? जातिगत विषमता के निवारण के सम्बन्ध में सन्तों की वाणियाँ आज भी मौजूद हैं। लगता है कि जाति के इस मकड़ जाल से उबरने के लिए सन्तों के बताए हुए मार्ग के अलावा कोई दूसरा विकल्प नहीं है।

भक्ति आन्दोलन के सन्त मनुष्य मात्र को एक मानते थे। उनमें जातिगत अथवा वर्णव्यवस्था की प्रतिष्ठा करनें वाली क्षुद्र प्रवृत्तियां नहीं थीं। ''स्वामी रामानन्द'' का तो मूल मंत्र था, जिसे सन्त कबीर ने इस प्रकार स्वीकार किया– ''जाति–पांति पूछे नहीं कोई, हरि को भजे सो हरि का होई।'' (स्वामी रामानन्द) रामधारी सिंह दिनकर के अनुसार– ''इस शिक्षा को द्विजेत्तर जातियों ने बड़े उत्साह से ग्रहण किया।'' कबीर, नानक, दादू आदि ने जो कुछ भी कहा वह मध्ययुगीन विशाल जनता की आवाज थी। उच्च वंशीय जाति वालों को यह शिक्षा ठीक नहीं लगती थी। अपने जनोपयोगी उद्देश्य की पूर्ति के लिए रामानन्द ने निम्न वर्गीय सन्तों में कबीर और रैदास को शिष्य बनाया। ''गोसाई विट्ठल दास'' ने रसलीन, रसखान को दीक्षा दी। उन्होंने केवल यही शर्त लगायी कि भगवान की शरण में आने के बाद मनुष्य, मनुष्य में भेद नहीं रह जाता। ''चैतन्य'' के शिष्य ''हरिदास'' अछूत थे। इसी प्रकार ''नामदेव'' के शिष्य ''चोखमेला'' भी अछूत थे। इतना ही नहीं भक्ति–युगीन सन्तों ने हिन्दू–मुस्लिम एकता पर भी विशेष बल दिया।

सारांश

सभी सन्त समाज के निम्न वर्गो से ही आये हैं किन्तु इनमें जातिगत व्यवस्था के प्रति किसी प्रकार की आत्महीनता की भावना दृष्टिगोचर नहीं होती। अनेक सन्तों ने अपना–अपना स्वतंत्र सम्प्रदाय या पंथ स्थापित किया है जो इनके जातिगत व्यवस्था के विरोध में इनकेआत्म–विश्वास का द्योतक है। कदाचित् आज के मनोविश्लेषणवादी, जो व्यक्ति की हर चेष्टा में कामप्रवृत्ति या आत्महीनता की ग्रन्थि की प्रतिक्रिया का अस्तित्व सिद्ध कर देने के अभ्यस्त हैं, इन सन्तों में भी ऐसी प्रतिक्रिया सिद्ध; कर सकते हैं, किन्तु हमें ऐसा प्रतीत नहीं होता। इनके इस आत्मविश्वास के पीछे आत्महीनता की प्रतिक्रिया न होकर उस विचारधारा एवं भावना का बल है जो क्षुद्र से क्षुद्र व्यक्ति में भी ब्रह्म का अस्तित्व स्वीकार करती है। सभी सन्तों ने जातिवाद और वर्ग–भेद का विरोध किया। उन्होंने यह मत प्रकट किया कि कोई भी व्यक्ति चाहे वह नीच जाति का ही क्यों न हो यदि स्वच्छ हृदय से ईश्वर की भक्ति करता है तो वह सुगमता से ईश्वर को प्राप्त कर सकता है। उनकी दृष्टि में न कोई ऊँचा था और न कोई नीचा।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचनोपरान्त मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचता हूँ कि सभी सन्त मानवतावादी भावना से प्रभावित थे। उन्होंने विश्व–बन्धुत्व का

पाठ पढ़ा था। उनका मत था कि समस्त जीव उस एक ही परमात्मा के अंश हैं और उन सबके अन्दर एक ही आत्मा विद्यमान है। सन्तों का यह मत था कि स्वच्छ हृदय के द्वारा ही ईश्वर को प्राप्त किया जा सकता है। कलुषित हृदय वाला व्यक्ति ईश्वर को कभी प्राप्त नहीं कर सकता। सभी सन्तों ने गुरू को अत्यन्त महत्व प्रदान किया। उनका मत था कि गुरू ही ईश्वर प्राप्ति का साधन है। वह भक्त के अज्ञान को दूर करता है और उसमें ज्ञान का संचार करता है। सन्त शिरोमणि कबीरदास का तो यहाँ तक कहना है कि शाक्त ब्राह्मण कभी न मिलें और यदि वैष्णव चण्डाल भी मिले तो उसका मिलना श्रेयस्कर है। उसे भगवान के समान मानकर गले लगाना चाहिए।

'साषत बांभन मति मिलै बैसनौं मिलै चंडाल।
अंक माल दे भेटिए मानौ मिलै गोपाल।।'

सन्त कबीरदास ने समाज की इन व्यवस्थाओं से अपने को दुःखी एवं व्यथित बताते हुए कहते हैं। कि
'दुखिया दास कबीर है, जागे अरु रोवै।'

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.कबीर और आज का समय, आलोचना, त्रैमासिक, सहस्त्राब्दी, अंक एक अप्रैल–जून 2000, नई दिल्ली।
2.उत्तर भारत की संत परम्परा – आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, प्रकाशक भारती भण्डार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद।
3.कबीर ग्रंथावली – सम्पादक डॉ. श्याम सुन्दरदास, नागरी प्रचारिणी सभा काशी द्वारा प्रकाशित।
4.कबीर वाणी सुधा – सम्पादक डॉ. पारसनाथ तिवारी, प्रकाशन वर्ष 1972, हिन्दी परिसर, प्रयाग विश्वविद्यालय, प्रयाग।
5.चरणदास की वाणी, भाग 1 एवं 2, प्रेस प्रयाग, दयाबोध, दायी वार्ड, जेल प्रेस, जयपुर वेलविडियर प्रिंटिंग वर्क्स, इलाहाबाद,
6.दादू दयाल की वाणी, प्रेस प्रयाग, दयाबोध, दायी वार्ड, जेल प्रेस, जयपुर बेलबेरियल प्रिंटिंग वर्क्स, इलाहाबाद।
7.पल्टू साहब की वाणी, भाग 1,2,3 वे. प्रेस, प्रयाग, 1961.
8.मलूक दास की वाणी – वे. प्रेस, प्रयाग, 1961.
9.संत साहित्य – श्री भुवनेश्वर नाथ, माधव ग्रंथ माला कार्यालय, बांकीपुर, 1941.
10. हिन्दी संत काव्य में योगतत्व– डॉ. रवि कुमार, अमन प्रकाशन, कानपुर,

सत्येन्द्र प्रकाश
(विषय हिन्दी) अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा(म प्र)

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org